thearyasamaj.org

संस्थापित १८६७ ई.

ओ३म्

उरु ज्योतिः चकृथु आर्याय — ओ३म् — आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : ११६ ● अंक : ४४ ● २५ नवम्बर, २०१४ मार्ग शीर्ष शुक्ल तृतीया सम्वत् २०७१ ● दयानन्दाब्द १६० वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११५

मूर्धन्य सन्यासी स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती का 75वाँ जन्मोत्सव

योग निकेतन सभागार रोड़ नं. 78 पश्चिमी पंजाबी बाग, दिल्ली में बड़े ही उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती अध्यक्ष पातंजलि योग धाम, आर्य नगर, ज्वालापुर का 75वाँ जन्मोत्सव अमृत महोत्सव के रूप में दिनांक 16 नवम्बर 2014 को योग निकेतन सभागार रोड नं. 78 पश्चिमी पंजाबी बाग, दिल्ली में प्रातः 9 बजे से 2 बजे तक बड़े ही उल्लासमय वातावरण में मनाया गया। जिसमें देश के कोने कोने से उनके योग शिष्य, श्रद्धालु व आर्य नर नारियों, सन्यासियों, वानप्रस्थियों ने भारी संख्या में भाग लेकर स्वामी जी के दीर्घामुष्य की कामना की। स्वामी जी की केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के बैंड बाजों के साथ समारोह स्थल पर आगवानी की गयी।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने स्वामी जी के उदात्त जीवन पर प्रकाश डाला। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री अनिल आर्य ने समारोह का संचालन किया। समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में डा. योगानन्द शास्त्री पूर्व अध्यक्ष दिल्ली विधान सभा तथा प्रवेश वर्मा सांसद ने स्वामी जी को शुभकामनायें दी। कार्यक्रम का आरम्भ प्रातः 9 बजे से 10 बजे तक डा. नरेन्द्र वेदालंकार के ब्रह्मत्व में आयोजित वृहद यज्ञ से हुआ। इसके पश्चात् ध्वजारोहण माया प्रकाश जी त्यागी, कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा ने किया। स्वामी जी के अब तक के कृतित्व एवं उनके स्पृहणीय व्यक्तित्व पर सर्वश्री स्वामी धर्मानन्द जी उड़ीसा, स्वामी अग्निवेश जी, आचार्य प्रेम पाल शास्त्री, श्री देवेन्द्रपाल वर्मा-प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र., स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती-मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र., श्री वीरेन्द्र योगाचार्य, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, डा. महेश विद्यालंकार, स्वामी प्रणवानन्द, स्वामी धर्ममुनि जी, स्वामी विश्वानन्द जी, स्वामी सच्चिदानन्द जी, स्वामी रामवेश जी, श्री मनोहर लाल चावला, श्री यशवीर आर्य, श्री राम कुमार सिंह, डा. जयेन्द्र आचार्य, आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा, बहन पूनम, श्री ओम प्रकाश रोहतक, श्री राम किशोर शास्त्री, डा.सोमदेव शास्त्री मुम्बई, बहन गायत्री मीना, कैप्टन अशोक गुलाटी, श्री प्रवीण आर्य गाजियाबाद, श्री माया प्रकाश त्यागी कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री दर्शन अग्निहोत्री, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य नागपुर, श्री मनोहर लाल चावला, श्री यशवीर आर्य, श्री राम कुमार सिंह, परवेश राहा, श्री राम किशन शास्त्री बहरोर, माता सुषमायती, माता विजयारानी शर्मा, श्री ओम प्रकाश अग्रवाल, श्री छत्र सिंह नागर, श्री ओम सपरा, श्री रण सिंह राना, श्री संतोष शास्त्री आदि गण्यमान्य संयासियों विद्वानों व नेताओं ने स्वामी जी के प्रति शुभकामनायें प्रकट की। उनके अब तक के समाज के उत्थान, यज्ञ एवं योग शिक्षा के प्रचार प्रसार की मुक्त कंठ से प्रशंसा की और परमात्मा से उनके शतायुष्य स्वस्थ और निरोग जीवन की कामना की ताकि वे समाज और राष्ट्र को इसी प्रकार उन्नति का मार्गदर्शन देने में समर्थ रहें। इस अवसर पर स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती अभिनन्दन समिति द्वारा डा. सुरेन्द्र कादियाण के सम्पादकत्व में प्रकाशित अभिनन्दन ग्रंथ का विमोचन भी किया गया। केन्द्रीय युवक परिषद के कार्यकर्ता सर्वश्री सौरभ गुप्ता, अरूण आर्य एवं श्री विश्वनाथ जी ने समारोह की सम्पूर्ण व्यवस्था का भार संभाला।

(उपरोक्त से सम्बन्धित फोटो पृष्ठ..2 पर देखें) ●●●

प्रदेश के सभी आर्यजन निष्कलुष मन से आर्य समाज आन्दोलन को संगठित रूप से चलाये

-देवेन्द्रपाल वर्मा

सर्वोच्च न्यायालय ने दिनांक २१.११.२०१४ को आर्य प्रतिनिधि सभा के सभी विवादों के उच्च न्यायालय लखनऊ खण्ड पीठ की डबल बेंच के निर्णय को सही घोषित कर दिया है अब कोई भी विवाद न्यायालय में नहीं है। विवादों के इस काल में संगठन के कार्य में क्षीणता आयी। महर्षि दयानन्द ने पराधीन भारत में आर्य समाज संगठन को आन्दोलन नाम दिया था और देश में ही नहीं सम्पूर्ण मानव जाति में फैलती बुराइयों, भ्रष्टाचार, ढोंग पाखण्ड अशिक्षा और नारी शोषण के विरूद्ध आवाज उठायी थी और कहा था कि यह आन्दोलन सदैव सक्रियता से चलता हुआ सभी बुराइयों से रहित सम्पूर्ण मानव जाति को सुखी स्वतंत्र और समृद्धि प्रदान करे।

आन्दोन तीव्र गति से चला। बुराइयां मिटने लगी। देश स्वतंत्र हुआ। परन्तु इधर कुछ काल से हममें उदासीनता आयी आन्दोलन शिथिल हुआ सभी बुराइयां पुनः पनपने लगी और हम अपने अहंकार के वशीभूत लक्ष्य से भटक गये। विवाद पनपने लगे और न्यायालय जाने लगे थे। अब विवाद समाप्त हो गये। अब हमें सभी विवादों से हट कर संगठन को सुदृढ़ बनाने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के तत्वावधान में अपने मन की तन्दारकलुष वैर विरोध का सर्वथा परित्याग करके आर्य समाज आन्दोलन को तीव्रता से चलाने का संकल्प लेना है। और ऋषि के मन्तव्यों को पूर्ण करना है।

मा0 सर्वोच्च न्यायालय नई दिल्ली ने मा0 उच्च न्यायालय लखनऊ बेंच के आदेश दिनांक-25-09-2014 को सही माना।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ के निर्वाचन सम्बन्धी विवादों का निस्तारण करते हुए माननीय उच्च न्यायालय लखनऊ खण्डपीठ में योजित विशेष अपीलों में पारित आदेश दिनांक-25-09-2014 के द्वारा डिप्टी रजिस्ट्रार, फर्म्स सोसाईटीज एवं चिट्स, लखनऊ मण्डल, लखनऊ द्वारा पारित आदेश दिनांक-10-04-2013 एवं 11-04-2013 तथा माननीय उच्च न्यायालय लखनऊ बेंच में योजित रिट याचिका संख्या-2692/2013 में पारित आदेश दिनांक-25-04-2013 को निरस्त कर दिया गया था।

माननीय उच्च न्यायालय लखनऊ बेंच द्वारा पारित आदेश दिनांक-25-09-2014 के विरूद्ध सर्वोच्च न्यायालय नई दिल्ली में योजित एस0एल0पी0-27761/2014 श्री जयनारायण अरूण एवं अन्य बनाम् उत्तर प्रदेश सरकार एवं अन्य में पारित आदेश दिनांक-21-11-2014 के द्वारा उक्त एस0एल0पी0-27761/2014 को खारिज करते हुए माननीय उच्च न्यायालय लखनऊ बेंच द्वारा पारित आदेश दिनांक-25-09-2014 को सही माना है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ के वर्तमान वैधानिक एवं निर्विवादित प्रधान-श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, मन्त्री- स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती एवं कोषाध्यक्ष-डॉ0 धीरज सिंह हैं।

नोट–निर्णय की अविकल्प प्रतिलिपि पेज-8 पर देखें।

देवेन्द्रपाल वर्मा	स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती	आचार्य वेदव्रत अवस्थी
प्रधान/संरक्षक	मंत्री/प्रधान सम्पादक	सम्पादक

thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

नेहरू जयन्ती कार्यक्रम में प्रधानमंत्री को आमंत्रित न करना कांग्रेस की ओछी सोच

14 नवम्बर, हमारे देश के प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू का जन्म दिवस है। सारे देश में इसे बाल दिवस के रूप में मनाते हैं। नेहरू जी 18 वर्ष अपने जीवन की अन्तिम घड़ी तक देश के प्रधानमंत्री रहे। सारा देश उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखता रहा। व्यक्ति व्यक्ति के विचार में कुछ न कुछ विभेद होता है। नेहरू जी सरदार पटेल, सेठ गोविन्द दास तीनों ही कांग्रेस के प्रमुख नेता थे। नेहरू जी का व सेठ गोविन्द दास जी का राष्ट्र भाषा हिन्दी के विषय में कुछ वैचारिक मतभेद था। परंतु संसद में कभी भी वैचारिक मतभेद जाहिर नहीं हुआ। दोनों अपनी अपनी विचारों में अपनी अन्तिम श्वांस तक दृढ़ रहें। उसी प्रकार नेहरू जी एवं सरदार पटेल के विचारों में भी राजकीय व्यवस्था के लिए कुछ अन्तर था परंतु वह कभी भी सतही स्तर पर नहीं आया। यह इन तीनों नेताओं की गुरूता थी। परंतु धीरे धीरे कांग्रेसी नेता सरदार पटेल को भुला बैठे। उनको कार्यों को गहनीयता से देखना बन्द कर दिया। देश में एक जाति वर्ग विशेष उन्हें अपना नेता कहकर मान देता रहा।

वर्ष 2014 के निर्वाचन में भारतीय जनता पार्टी बहुमत से संसद में पहुँची, उसकी सरकार बनी और प्रधानमंत्री बने श्री नरेन्द्र मोदी। मोदी जी ने सरदार पटेल की गुरूता को ह्रदयंगम करके उनके जन्मदिवस पर उत्सव का आयोजन किया। उनकी उच्च प्रतिमा निर्माण का निश्चय किया। इसके लिए वे प्रशंसा के पात्र है। कांग्रेस को अपनी जाने या अनजाने में हुयी भूल को स्वीकार करके उस कार्यक्रम की प्रशंसा करनी चाहिए थी और पूरी तरह से सहयोगी बनना चाहिए था परंतु कांग्रेस नेताओं ने इसे तंग नजरिये से देखा। उसने नेहरू जी की गरिमा में संभवतः इसे ठेस माना। जबकि सरकार की ओर से गरिमा पर किसी भी प्रकार की आंच नहीं उठायी गयी।

14 जनवरी को इस वर्ष नेहरू जी की 125वीं जयन्ती है। भारत सरकार ने नेहरू जयन्ती के उपलक्ष्य में आगे के आयोजनों को करने की पहले से ही घोषणा की थी। परंतु कांग्रेस के नेताओं ने अलग से उनका जयन्ती का कार्यक्रम रखा और उस कार्यक्रम में देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को आमंत्रित नहीं किया। इसे मैं कांग्रेस की अदूरदर्शिता कहूँ या ओछी सोच। कांग्रेसी नेता सत्ता के मद में देश के प्रति अपने नैतिक दायित्व को नजरअंदाज किया, इसी से जनता ने उसे सत्ताच्युत किया। आशा यह की जाती थी कि कांग्रेस अपनी पराजय के कारणों को गहराई से देखेगी और वैसी गलतियां भविष्य में न होने देने का दृढ़ संकल्प लेकर राजनीतिक क्षेत्र में नई ऊर्जा के साथ उतरेगी। परंतु इसने ऐसा कोई चिन्तन नहीं किया। सत्ता में आये मोदी जी को अपना व्यक्तिगत शत्रु सा मान लिया। कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी एवं उपाध्यक्ष राहुल गांधी के ऐसे ही कुछ बयान जनता में आ रहे हैं। परंतु यह कांग्रेस के हित में नहीं है। उन्हें सरकार के प्रत्येक कथन व क्रिया कलाप पर गहन दृष्टि रखने की अपेक्षा है और उनकी क्रिया कलाप पर गहन दृष्टि रखते हुए उससे यदि देश की कोई हानि दृष्टिगत हो रही है तो उसका प्रखर विरोध संसद में व संसद से बाहर भी करना चाहिए। परंतु कुछ न कुछ सही गलत कहते व करते रहना उनकी खीझ का घोतक है जो नहीं होना चाहिए।

आशा है कांग्रेसी नेता इस सब पर गहन चिन्तर करेंगे और अपनी भूल को जानेंगे मानेंगे और भविष्य में ऐसी निम्न स्तरीय भावनाओं को अपने मनों में नही पनपने देंगे एवं सभी राजनीतिक दलों के लोग राष्ट्रोत्थान की भावना का अपने अपने मनों में पूर्णतया सम्बर्धन कर राष्ट्र को सर्वोच्च शिखर पर प्रतिष्ठापित करने में प्रयत्नशील होंगे।

-सम्पादक

मूर्धन्य सन्यासी स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती का 75वाँ जन्मोत्सव

दिनांक 16 नवम्बर 2014 को योग निकेतन सभागार रोड नं. 78 पश्चिमी पंजाबी बाग, दिल्ली में सम्पन्न हुआ जिसकी सचित्र झलकियाँ प्रस्तुत हैं।

thearyasamaj.org

योग एवं दिव्यता की प्रतिमूर्ति
स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

-स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

नवोदित सूर्य की तरह लावण्यता एवं तेजस्वी आभा से प्रभावित मुखमण्डल, आत्मीयता एवं स्नेहिल भाव से परिपूर्ण नेत्र, मधुरता से परिपूर्ण वाणी, सदैव उत्साहित एवं प्रसन्न रहते हुए सभी को प्रसन्न करने का मूल मंत्र देने वाले शरीर से सामान्य होते हुए भी विचारों से ऊँची भावनाओं का भण्डार लेकर सुशोभित होने वाले गैरिक वस्त्रों की आभा से प्रभावित सौम्यता एवं दिव्यता की प्रतिपूर्ति दर्शन मात्र से ही दर्शकों के अन्तःकरण को स्पन्दित करने वाले व्यक्तित्व का नाम है दिव्यानन्द सरस्वती, आपने पूर्व नाम योगेन्द्र पुरुषार्थी को सार्थक करके अपना पूरा जीवन योग एवं पुरुषार्थ में ही व्यतीत किया है। मुझे स्मरण आ रहा है कि गुरूकुल झज्जर, हरियाणा की स्वर्ण जयन्ती पर फरवरी, 1966 में आपने व्यायाम प्रदर्शन किया था। उसी से मैं बहुत प्रभावित हुआ। मैंने गुरूदव पूज्य स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती से निवेदन किया कि हमें भी व्यायाम प्रशिक्षण प्रदान करायें तब स्वामी जी ने गुरूकुल झज्जर स्वामी ओमानन्द जी के पास भेजा था। स्वामी जी ने हमारी बात सुनकर श्री योगेन्द्र जी पुरूषार्थी जी को बुलाकर कहा था कि ये ब्रह्मचारी गुरूकुल तातारपुर से आये हैं इन्हें आपको व्यायाम प्रशिक्षण आत्मीय भाव से सिखाना है। तब पुरूषार्थी जी ने हमें दण्ड बैठक आसन तथा अन्य लाठी के अभ्यासों का प्रशिक्षण दिया था- तभी से मेरे अन्तःकरण में आपके प्रति श्रद्धा का भाव स्थापित है और यह सदैव सुरक्षित रहेगा ऐसी मेरी मान्यता है- पूज्य स्वामी जी का अभिनन्दन ग्रंथ तैयार हो रहा है, इसकी सूचना मिलते ही मैं उनके संस्मरणों में खो गया जो कुछ चुने हुए मोती मिले मैं उन्हें आपके चरणों में समर्पित करता हुआ सौभाग्य अनुभव कर रहा हूँ।

गुरूकुल सिरसागंज, फिरोजाबाद, उ.प्र. में भी मुझे दो वर्ष शास्त्री कक्षा में पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ वहीं विदित हुआ कि यहाँ के आचार्य पूज्य गुरूदेव महात्मा देव स्वामी जी से व्याकरण पढ़ने के लिए आचार्य बलदेव जी एवं स्वामी इन्द्रवेश जी गए थे उनके स्वभाव एवं प्रेरणा से प्रभावित होकर पुरूषार्थी जी ने भी अपना जीवन इसी प्रकार बनाने का संकल्प ले लिया। लेकिन संकल्प वहाँ पूरा होता हुआ दिखाई न दिया, क्योंकि परिसर के लोग इनके इस जीवन से प्रसन्न नहीं थे, अतः वैराग्य की भावना को आहत होता हुआ देखकर इन्होंने स्वामी इन्द्रवेश जी एवं आचार्य बलदेव जी के साथ ही रहने का मन बना लिया। यहाँ दोनों ओर से ही प्रशंसा की जायेगी, क्योंकि यदि पुरुषार्थी जी को सफल करना है तो अपनी सफलता बीच में ही छोड़नी होगी। निर्णय क्या लिया जाय इधर अपनी योग्यता ऊधर एक राष्ट्र के निर्माण के लिए नवयुवकों को तैयार करने के लिए उचित वातावरण जो यहां सर्वथा अयुक्त था, अतः दोनों ओर से ही योजना बनी कि यह गुरूकुल और यह क्षेत्र ही छोड़ दिया जाये। रात्रि को गुरूकुल से भाग लिये। शिकोहाबाद रेलवे स्टेशन तक (जो लगभग 15 किलोमीटर है) दौड लगाई और इन्हें साथ लिया स्वामी इन्द्रवेश जी बताया करते थे कि ये रास्ते में थक गये और बोले कि मैं अब आगे नहीं चल सकता तो स्वामी जी ने इन्हें अपनी पीठ पर लादा और दौड़ते रहे। गाड़ी में बैठकर दिल्ली आये वहां से गुरूकुल आश्रम झज्जर जाकर इन्हें शान्ति मिली और वहीं पर इनका निर्माण किया गया। इनकी लगन-तपस्या, साधना ब्रह्मचर्य के प्रति निष्ठा और उत्साह देखकर स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने इन्हें नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा प्रदान कर दी और तभी से ये मूलशंकर से शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी की तरह नैष्ठिक ब्रह्मचर्य का पालन करते रहे वहाँ आपकी दिनचर्या देखकर मैं बाल्यावस्था में अत्यन्त प्रभावित रहा। प्रातः एवं सायंकाल कई घण्टे एकान्त में बैठकर समाधि लगाने का अभ्यास किया करते थे और पुनः यज्ञशाला में जाकर यज्ञ में भी अनिवार्य रूप से उपस्थित होते थे। ऐसी प्रतिभा से युक्त तपस्या ही आपके जीवन को कुन्दन बना सकी। उसके पश्चात आप बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी बने आपकी काव्यकला, आपकी वक्तव्य कला, आपकी साधना शक्ति, आपकी गुरू के प्रति भक्ति, आध्यात्मिक शक्ति के साथ-साथ शरीर और समाज को भी बल प्रदान करने के लिए उत्सुक हो उठी और आपने गुरूकुल झज्जर से गुरूकुल कालवा में आसन जमा लिया। वहां की साधना और तपस्या आपको गुरूकुल कांगड़ी में ले आई वहां हिमालय की पवित्र छाया में गंगा के पावन तट पर बैठकर अपनी ऊर्जा का विकास किया। जैसे महर्षि दयानन्द सरस्वी जी ने पाखण्ड खण्डिनी पताका के पश्चात पुनः तपस्या की थी उसी प्रकार आपकी तपस्या ने आपको कुन्दन बना दिया और आप सामाजिक ऊर्जा बढ़ाने के लिए स्थान-स्थान पर देश और विदेशों में जाकर योग साधना के शिविर लगाने लगे। अपनी योग्यता से आपने आबाल वृद्ध को प्रभावित किया और सात्विक ऊर्जा से लोकोपकार करते हुए सच्चे सन्यास धर्म को निभाने का आपने व्रत लिया। दिल्ली रामलीला मैदान के आर्य महासम्मेलन में पूज्य दादा गुरु स्वामी सच्चिदानन्द जी योगी द्वारा सन्यास आश्रम से दीक्षित होकर आप स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी के नाम से विभूषित हुए। मैं स्वयं उस दृश्य का साक्षी हूँ। मुझे वह दृश्य अति मनोहर लग रहा था। स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज ने भी कई अन्य महानुभावों को भी सन्यासी बनाया था। लेकिन आपने अपनी दूरदर्शिता से श्रेष्ठतम आचार्य का चयन करके अपने आपको महर्षि दयानन्द सरस्वती परम्परा में उच्च स्थान प्राप्त कर लिया था। उस समय से लेकर आज तक आप अपनी योग्यता से समाज को लाभान्वित कर रहे हैं। लेखक के रूप में भी आपने ख्याति प्राप्त की है। संस्कृत में गीत निर्माण एवं हिन्दी में भी आप काव्य कला के पोषक बनें। योग विषय में पी.एच.डी. करके एक ग्रंथ वेदों में योग विद्या से आने वाली पीढ़ी का आपने महान उपकार किया है। आपने योगधाम की स्थापना एवं संचालन से योग परम्परा को लम्बे समय तक चलते रहने का अवसर मिलेगा और भावी पीढ़ी में योग के प्रति रूचि बनी रहेगी। आप भाषण कला में भी अपनी मधुर वाणी से युवकों के प्रेरणा स्रोत बनकर राष्ट्र निर्माण, चरित्र निर्माण का कार्य कर रहे हैं। आप अपनी इस अवस्था में भी सदैव पुरूषार्थ करते रहते हैं। आपकी एक पंक्ति मुझे सदैव स्मरण रहती है-

"पुरूषार्थ कर पुरूषार्थी पुरूषार्थ सफलता देता है।"

अपने पुरूषार्थ से जीवन की सफलता को साक्षात् अनुभव करके दूसरों को सफल बनाने का पुरुषार्थ प्रशंसनीय एवं अभिनन्दनीय हैं, अतः मैं भी अभिनन्दन समारोह के शुभ अवसर पर सभी अधिकारी एवं कार्यकर्ताओं के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जो आपने एक अभिनन्दनीय व्यक्तित्व के अभिनन्दन कार्यक्रम आयोजित कर उसमें अभिनन्दन ग्रंथ भेंट करने का निर्णय लिया है। मैं अपनी पवित्र भावनाएं आपके चरणों में सुमनान्जलि के रूप में समर्पित करता हुआ अपने गुरूकुल पूठ परिवार की ओर से एवं आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र., लखनऊ की ओर से हार्दिक अभिनन्दन करता हुआ आपके सुन्दर स्वास्थ्य एवं दीर्घायु की कामना करता हूँ। भूयश्च शरद शतात् होकर हमें सदैव प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

संचालक- गुरूकुल पूठ
गढ़मुक्तेश्वर, हापुड
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. लखनऊ

माता प्रेमलता शास्त्री का आकस्मिक देहावसान

गुरूकुल आश्रम आमसेना के संचालक पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी ने कहा कि अखिल भारतीय महर्षि दयानन्द सेवाश्रम संघ की महामंत्री माता प्रेमलता खन्ना (शास्त्री) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित दयानन्द सेवाश्रम संघ की देखरेख में आसाम, नागालैंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान आदि प्रांतों में विद्यालय एवं छात्रावास चल रहे हैं। इन आश्रमों का संचालन सार्वदेशिक सभा की ओर से स्व. पृथ्वीराज शास्त्री संचालन करते थे उनके स्वर्गवास के पीछे उनकी पत्नी माता प्रेमलता खन्ना (शास्त्री) ने इस दयानन्द सेवाश्रम की बागडोर संभाली तथा शास्त्री जी से भी बढ़-चढ़कर इस सेवाश्रम संघ के कार्य को आगे बढ़ाया। दिल्ली में भी बालक बालिकाओं के दो अलग अलग गुरूकुल (आवासीय छात्रावास) का संचालन किया। इन आश्रमों में पूर्वाचल के सैंकड़ो बच्चे रहकर विद्याध्ययन के साथ वैदिक धर्म की शिक्षा भी प्राप्त करते हैं। माता जी के अचानक जाने से उनके पीछे इन सब आश्रमों के सामने अंधकार सा छा गया है क्योंकि वे ही इनकी प्राण सर्वे सर्वा थी। माता जी के जाने से दयानन्द सेवाश्रम को ही नहीं बल्कि सारे आर्य जगत को अपूरणीय क्षति हुई है।

गुरूकुल परिवार ने माता जी के स्वर्गवास पर गहरा शोक प्रकट करते हुए उनके दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की है। प्रभु उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

स्वामी व्रतानन्द सरस्वती, आचार्य
गुरूकुल आश्रम आमसेना

thearyasamaj.org

वीरवर गोकुल शौर्य और बलिदान का प्रतीक

राजेशार्य आट्टा,
कच्चा किला साढौरा, यमुनानगर

जिस समय दक्षिण में समर्थ गुरू रामदास व माता जीजाबाई औरंगजेब की आंधी से टक्कर लेने वाली सुदृढ़ चट्टान का निर्माण कर रहे थे, उसी समय ब्रज मण्डल में अपने खेत व पशुओं में मस्त रहने वाले अल्हड़ हलधरों ने मजहबी अत्याचार से निजात पाने के लिए अपने परम्परागत शस्त्र संभाले। जब उनकी बहू बेटियों पर हाथ उठने लगा तो हिमगिरि के अन्दर धधकता लावा फूट निकला।

इस क्षेत्र में शान्ति स्थापित करने व किसानों से कर वसूलने के लिए शाहजहाँ ने मुर्शिद कुलीखाँ तुर्कमान को नियुक्त किया तो सैनिक अभियान की आड़ में वह किसानों को खदेड़ कर उनकी स्त्रियों से अपनी वासना शान्त करने लगा। इस पाप का दण्ड देने के लिए किसानों में विद्रोह व द्वेष की भावना भड़क उठी। वे संगठित होकर तुर्कमान की सैनिक टुकड़ियों और चौकियों पर हमला करने लगे। इस विद्रोह का दमन करने के लिए तुर्कमान ने 1638 ई. में सम्भल के अन्तर्गत जटवाड़ नामक एक सुदृढ़ गढ़ी पर आक्रमण किया, परंतु मौका पाकर स्वाभिमानी वीरों ने रात्रि के समय मदिरा में चूर तुर्कमान को घेरकर उसका वध कर दिया।

इससे हिण्डौन परगना में बसे जाट, गूजर, मीणा और जादो राजपूत किसानों में विशेष उत्साह आ गया और उन्होंने विद्रोह का झण्डा बुलन्द कर दिया। जीवन भर इस्लाम के लिए देशद्रोह व जातिद्रोह का भार ढोने वाले गधे के समान मिर्जा राजा जय सिंह ने शाहजहाँ के आदेश पर इस विद्रोह को दबा दिया। क्रान्ति की ज्वाला तो शान्त हो गई पर चिंगारी अन्दर ही अन्दर जलती रही।

औरंगजेब के अत्याचारों के विरूद्ध लोगों को स्वाधीन, देशभक्त, स्वाभिमानी व हिन्दू जाति का रक्षक बनने का संदेश सुनाने के लिए महाराष्ट्र के क्रान्तिकारी संत समर्थ गुरू रामदास 1665 में हरियाणा पहुँचे। इस अवसर पर (मु. नगर) के टीले पर वीर गोकुला ने स्वातन्त्र्य यज्ञ में आहुत होने की प्रतिज्ञा की व गुरू जी का आशीर्वाद लिया। समस्त कृषक वर्ग ने वीर गोकुला को अपना नेता मान लिया।

मई 1666 में गोकुला ने भगवा रंग का 'शिव हर-हर महादेव' लिखा झण्डा उठाकर अपने पांच हजार वीर योद्धाओं के साथ मथुरा की ओर प्रस्थान किया। वहां आकर उसने मुख्य मुसलमान हाकिम तथा अन्य कई शाही अधिकारियों को मौत के घाट उतार दिया। फिर वह उन मंदिरों में जा पहुँचा जहाँ गायों को काटा जाता था। वहां उसने दो सौ इक्कीस बूचड़ो को तथा दो सौ पचास मांस बेचने वालों को कत्ल कर डाला। गोकुला ने किसानों को शाही कर न देने का आहवान किया और दिल्ली आगरा के मध्य क्षेत्रों में छापामार युद्ध जारी रखा।

औरंगजेब ने अब्दुन्नीव खाँ को मथुरा का फौजदार पुनः नियुक्त किया। उसके सैनिक लगान वसूलने लगे, पर किसानों के विरोध के कारण उसे स्वयं मैदान में आना पड़ा। मथुरा परगने के किसानों का नेतृत्व स्वयं गोकुला ने संभाला। अप्रैल 1669 में फौजदार खान ने आंदोलनकारियों के प्रमुख गढ़ सुराहा गाँव का घेरा डालकर बर्बाद कर दिया। आक्रमण के समय गोकुला संगठन के जाट क्रांतिकारियों ने फौजदार खान को गोली से उड़ा दिया। मुगल सैनिक मैदान छोड़कर भाग निकले और उनकी युद्ध सामग्री जाटों के हाथ लगी। इससे क्रांतिकारी किसानों के उत्साह में वृद्धि हुई। उन्होंने सादाबाद नगर तथा परगने को लूट लिया। शाही खजाने से उन्हें 80,000 रूपये नकद प्राप्त हुए। अब मथुरा, आगरा, सादाबाद, महावन आदि परगने क्रांति के केन्द्र बन गये। हिन्दू नागरिकों ने गोकुला का खुले दिल से साथ दिया। शीघ्र ही 20000 आत्म बलिदानी वीरों की अवैतनिक सेना तैयार हो गई।

13 मई 1669 को औरंगजेब ने आगरा के सीमावर्ती क्रान्तिकारियों को दबाने के लिए सेनापति रादअंदाज को व सैफ शिकना को भी मथुरा का फौजदार बनाकर भेजा। उनकी सहायता के लिए शिकारी कुत्तों की भूमिका निभाने वाले राजपूत वीरमदेव को भी भेजा। पर वे सब चार महीने तक भी क्रान्ति को दबाने में सफल नहीं रहे। तब फौजदार सैफ शिकन ने गोकुला के पास लूट का समस्त माल वापिस करने तथा भविष्य में लूटमार अथवा अग्निकांड बन्द करने का एक शांति प्रस्ताव भी भेजा। इसे स्वीकारते ही गोकुला को गत अभियोगों से क्षमादान मिल सकता था, किंतु उस स्वाभिमानी वीर ने इसे यह कहते हुए ठुकरा दिया - '' मेरा अपराध क्या है जो मैं बादशाह से क्षमा मांगू, तुम्हारे बादशाह को मुझसे क्षमा मांगनी चाहिए, क्योंकि उसने अकारण ही मेरे धर्म का बहुत अपमान किया है, बहुत हानि की है। दूसरे उनके क्षमादान और मित्रता का भरोसा इस संसार में कौन करता है? उसने कुरान को साक्षी बनाकर अपने सगे भाई मुराद से जो वादे किये थे उन्हें तुम अच्छी तरह से जानते हो। कुरान भी मुराद को कत्ल होने से नहीं बचा पाई। क्षमादान अभी तीन वर्ष पहले शिवाजी को भी मिला था यदि कुंवर राम सिंह न होते तो अब तक वे परलोक में बैठे होते।

'' तुम चाहते हो कि मैं उस सामान को जो मैंने खुले मैदान में अपने बाजुओ के जोर से पाया है तुम्हारे चालाक बादशाह को दे दूं, जिससे हम फिर पंख कटे कबूतरों की तरह हो जाये। तुम्हें और तुम्हारे बादशाह को बड़ी मायूसी होगी कि वह सामान मेरे पास नहीं है। मैं रखता भी नहीं फौरन अपने जां निसारों के बीच बांट देता हूँ ताकि वे बाज बन सकें। मैं रहूं न रहूँ वह सामान अब मुगलों को न मिलेगा। वह तो तुम्हारी कब्रें तैयार करने के काम आयेगा। हाँ, तुम्हारे अंदाजे बयां से जाहिर होता है कि तुम मुझे लुटेरा साबित करना चाहते हो। तुम्हें मालुम हो, बल्कि तुम्हें मालूम है कि असली लुटेरे तुम्हारे बादशाह और शहजादे हैं। उनकी तरह हम अपनी प्रजा को नहीं लूटते। तुम खानदानी लुटेरे हो, बाहर से आकर मालिक बनकर बैठ गये हो।

भविष्य के लिए मैं मुगलों को क्या वचन दूँ, क्योंकि मेरा कोई भविष्य नहीं है। मैं किसी राज्य या जागीर को बचाने के लिए नहीं लड़ रहा हूँ। मैंने हिन्दुस्तान की मान-मर्यादा की रक्षा के लिए तलवार उठाई हैं। इसलिए अब हम दोनों में से एक ही रहना है। या तो बादशाह औरंगजेब रहेगा या यह नाचीज गोकुल।''

इस उत्तर ने संधि की संभावना को एक झटके में खत्म कर दिया। औरंगजेब जो गोकुल को अब तक साधारण जमींदार समझ रहा था, अब उसे बराबर का शत्रु मानकर उससे निपटने के लिए तोप और विशाल सेना के साथ दिल्ली से चलकर 28 नवम्बर 1669 को मथुरा जा पहुँचा। उसने यमुना के किनारे छावनी डाली और वहीं से युद्ध का संचालन करने लगा। मुगल सेना ने जाटों की तीन गढ़ियों रेवाड़ा, चंदरख और सरखरू पर एक साथ अचानक हमला कर दिया। अचानक घेराबंदी होने के कारण क्रान्तिकारी अपने परिवारों को गढ़ियों से बाहर नहीं भेज सके। अतः अनेकों अपनी पत्नियों को जौहर की ज्वाला में विदा करके अथवा तलवार के घाट उतार कर भूखे सिंह की भांति मुगल सेना पर टूट पड़े। अनुपम शौर्य के साथ वीरता का परिचय दिया, पर सेनापति हसन खां को हराने में सफल नहीं हो सके। लगभग 300 वीर शहीद हो गये, 250 स्त्री-पुरूष बंदी बना लिये गये और शेष भागने में सफल हो गये।

भागने वाले अपने घर नहीं गये अपितु वहां से 20 मील दूर तिलपत की गढ़ी में जा पहुँचे, जहां वीर गोकुला अपनी पूरी तैयारी के साथ विराजमान था और उसके साथ उसका ताऊ उदय सिंह सिंधी भी था। तिलपत से बीस मील दूर भयंकर जंगलों की आड़ लेकर जाट वीरों ने मुगलिया दस्तों पर बड़ी तत्परता और साहस के साथ आक्रमण किया। कई दिनों तक मुकाबला होता रहा। आग्नेय अस्त्रों ने जाट वीरों के पैर उखाड़ दिये।

एक रात्रि में उन्होंने अपना घेरा उठा लिया और तिलपत में युद्ध की तैयारियां शुरू कर दी। मुगल सेना ने गांव को घेर लिया और तोपों से गोलाबारी शुरू कर दी। जाट वीर तीन दिन तक जवाब देते रहे, पर गोलों की मार से सब कुछ तबाह हो गया। तिलपत गांव की समस्त विवाहित और अविवाहित नारियों ने घरों में आग लगाकर अथवा कुओं में कूद कर अपने सतीत्व की रक्षा की। इस युद्ध में मुगल सेनानायकों सहित 4000 सिपाही काम आये और कई हजार बुरी तरह जख्मी हुए। जबकि 5000 जाट वीर शहीद हुए। वीर गोकुला व उदय सिंह को 7000 सिपाहियों के साथ बन्दी बनाकर आगरा भेज दिया गया।

जनवरी 1670 के प्रथम सप्ताह में जाट सरदार गोकुला और उदय सिंह को औरंगजेब के सामने ले जाया गया। औरंगजेब ने उन्हें इस्लाम स्वीकार करने को कहा तो स्वाभिमानी देशभक्त वीर ने कड़े शब्दों में उत्तर देते हुए कहा- ''मैं क्षत्रिय जाट हूँ, मुसलमान कभी नहीं बन सकता और छोड़ देने पर फिर विद्रोह की आग जलाऊँगा।'' औरंगजेब ने दोनों सरदारों को निर्दयतापूर्वक कत्ल करने का आदेश दे दिया। अगले दिन गोकुल सिंह व उदय सिंह को

शेष पृष्ठ.........6

thearyasamaj.org

छात्रवृत्ति एवं अभिनन्दन समारोह का सफलतम आयोजन

मानव सेवा प्रतिष्ठान एवं नॉर्दन अमेरिकन जाट चैरिटी द्वारा दिनांक 12 अक्टूबर 2014 को अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति समारोह का भव्य आयोजन 119, गुरूकुल गौतमनगर, नई दिल्ली में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। समारोह का शुभारम्भ प्रातः यज्ञ के द्वारा आरम्भ किया गया, जिसमें श्री वीरसेन मुखी एवं श्रीमती सविता मुखी (यू.एस.ए.), श्री सत्य प्रसाद एवं श्री सुशीला बलदेव मल्हू तथा श्री रघुवर रामटहल एवं श्री प्रहलाद (सूरीनाम, दक्षिण अमेरिका) तथा श्रीमती पण्डिता सुमित्रा दुर्गा (हालैण्ड) ने यजमान पद को सुशोभित किया तथा यज्ञ ब्रह्मा का दायित्व रामपाल शास्त्री ने संभाला। इस यज्ञ में पण्डिता सुशीला बल्देव मल्हू (सूरीनाम) के साथ 20 व्यक्तियों का समूह जो सूरीनाम से भारत भ्रमण पर आये हुए थे, उन सबने भी यज्ञ में आहुति प्रदान कर धर्म लाभ उठाया।

इस कार्यक्रम में आर्यजगत के छह विद्वान-विदुषियों का सम्मान करते हुए उन्हें प्रशस्ति पत्र, शाल एवं 11-11 हजार रूपये की सम्मानित राशि श्री वीरसेन मुखी एवं श्रीमती सविता मुखी (यू.एस.ए.), श्री सत्यप्रसाद एवं श्रीमती बल्देव मल्हू (सूरीनाम), श्रीमती दिलभरी (हरियाणा) के कर कमलों से प्रदान की गई। जिसमें 1. पूज्य स्वामी चन्द्रवेश जी (आचार्य, स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली, रोहतक, हरियाणा) को श्री चौधरी रामपत आर्य ईस्माइला रोहतक हरियाणा स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया। 2. आचार्य वेदव्रत (छपरा, शाहाबाद, हरियाणा) को स्व. श्री पण्डित ऋषि बलदेव तिवारी हॉलैण्ड स्मृति सम्मान से सम्मानित किया। 3. आचार्या श्रीमती निर्मला जी (कन्या गुरूकुल मीर माजरा, पानीपत, हरियाणा) को श्रीमती लक्ष्मी देवी, नौलथा, पानीपत, हरियाणा स्मृति सम्मान से सम्मानित किया। 4. डॉ. अमीता आर्या (कन्या गुरूकुल चोटीपुरा, ज्योतिबा फुले नगर, उत्तर प्रदेश) को स्व. श्रीमती शीलवती देवी बल्लभगढ़, भरतपुर, राजस्थान स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया। 5. श्री चन्द्रभूषण शास्त्री (अधिष्ठाता, गुरूकुल पौंधा, देहरादून, उत्तराखण्ड) को स्व. श्री मास्टर रतनसिंह जी सुल्तानपुर डबास, दिल्ली स्मृति सम्मान से सम्मानित किया। 6. स्नातिका डॉ. सुरभि आर्या (कन्या गुरूकुल चोटीपुरा, ज्योतिबा फुले नगर, उत्तर प्रदेश) को श्रीमती ईतवारिया रामदास तिवारी हॉलैण्ड स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा अनेक शिक्षा संस्थाओं एवं गुरूकुलों के जरूरतमंद मेधावी एवं योग्य 85 छात्र-छात्राओं को 5 लाख रूपये की आर्थिक सहायता श्री वीरसेन मुखी एवं पूज्य स्वामी चन्द्रवेश जी के कर कमलों से वितरित की गयी। इस कार्यक्रम में श्री वीरसेन मुखी एवं श्रीमती सविता मुखी (यू.एस.ए.) द्वारा प्रदत्त धनराशि से प्रकाशित "अष्टाध्यायी भाष्य प्रवचनम्" का विमोचन भी किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण नॉर्थन अमेरिकन जाट चैरिटी द्वारा प्रेषित 10 लाख रूपये की सहायता राशि भारतवर्ष के विभिन्न स्थानों से आये हुए 65 छात्र-छात्राओं को वितरण करना रहा। साथ ही यू.एस.ए. से पधारे श्री वीरसेन मुखी जी द्वारा गुरूकुल गौतम नगर (दिल्ली) के 150 छात्रों को 40 हजार रूपये मूल्य की गर्म चादरें प्रदान करना भी इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण रहा।

मानव सेवा प्रतिष्ठान के प्रधान श्री सोमदेव शास्त्री, उप प्रधान श्री हरवीर सिंह शास्त्री, मंत्री श्री चन्द्रदेव जी शास्त्री आदि सभी अधिकारियों ने आये हुये अतिथियों को स्मृति चिन्ह एवं अंगवस्त्र प्रदान करके सम्मानित किया एवं आये हुए सभी अभ्यागत महानुभावों का धन्यवाद किया। अपरान्ह 1:00 बजे शान्तिपाठ के उपरान्त ऋषि लंगर (भण्डारे) के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

डॉ. कँवर सिंह शास्त्री
महामंत्री
मानव सेवा प्रतिष्ठान

बृहदाधिवेशन की सूचना

सभी पदाधिकारियों, प्रतिष्ठित, सहयुक्त, अन्तरंग सदस्यों, सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों/प्रतिनिधियों एवं जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधियों/पदाधिकारियों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 की वार्षिक साधारण सभा का अधिवेशन दिनांक-24 एवं 25 जनवरी, 2015 शनिवार एवं रविवार (माघ शुक्ल पक्ष चतुर्थी एवं पंचमी) को प्रातः 11 बजे से आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा जी की अध्यक्षता में आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, (नारायण स्वामी भवन), 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ में सम्पन्न होगा। एजेण्डा एवं विस्तृत कार्यक्रमों की रूप-रेखा सभी को डाक द्वारा भेजी जा रही है। कृपया समय से उपस्थित होकर अधिवेशन को सफल बनायें।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सभा मन्त्री

आचार्या सूर्या देवी चतुर्वेदा गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार से सम्मानित

2 नवम्बर 2014 गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार के रजत जयंती वर्ष पर इलाहाबाद संग्रहालय में एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया जिसमें वेद विदुषी आचार्या सूर्या देवी चतुर्वेदा पाणिनीय कन्या महाविद्यालय वाराणसी को 21000/- का नकद पुरस्कार व स्मृति चिन्ह तथा अंग वस्त्र देकर पूर्व न्यायमूर्ति गिरधर मालवीय ने सम्मानित किया। यह पुरस्कार सूर्या देवी कृत ब्रह्मवेद है अथर्ववेद पर दिया गया। माननीय न्यायमूर्ति ने हर्ष प्रकट करते हुए उनकी विद्वता की भूरि-भूरि प्रशंसा की और कहा कि समिति द्वारा विद्वानों को सम्मानित करना वैदिक साहित्य के उन्नयन की दिशा में अत्यन्त उत्तम कार्य है। इलाहाबाद विश्व विद्यालय की संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. किश्वर जहां नसरीन ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि लोगों को अपने व्यवहार में परिवर्तन लाना चाहिए। विद्या किसी जाति व व्यक्ति की बपौती नहीं है उन्होंने कहा कि आपकी कृतित्व ने यह प्रमाणित कर दिया है कि नारी अबला नहीं सबला है वह परिश्रम से सब कुछ प्राप्त कर सकती है। इस अवसर पर संग्राहालय का सभागार प्रबुद्ध नर-नारियों से खचाखच भरा हुआ था। अन्त में प्रसाद वितरण के पश्चात् सभा विसर्जित की गयी।

आर्य समाज पहासू का वैदिक महोत्सव 6 दिसम्बर से

आर्य समाज पहासू बुलन्दशहर का वैदिक महोत्सव आगामी 6, 7 व 8 दिसम्बर 14 दिन शनिवार, रविवार व सोमवार को बड़े ही धूमधाम के साथ आर्य समाज के प्रांगण में मनाया जायेगा। जिसमें आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान सन्यासी एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं। इस अवसर पर प्रतिदिन 8 बजे से 11 बजे तक यज्ञ व्याख्यान प्रवचन एवं भजनोपदेश एवं मध्यान्ह 1 बजे से 5 बजे तक वेद प्रवचन तथा सायंकाल 7 बजे से 11 बजे तक विभिन्न विषयों पर वेद चर्चा होगी। उपरोक्त कार्यक्रम की जानकारी श्री धर्मवीर सिंह आर्य मंत्री आर्य समाज पहासू ने दी।

वैदिक पूर्णिमा सत्संग समारोह पूर्वक सम्पन्न

कोटा, 7 नवम्बर। सत्संग के माध्यम से सत्य और असत्य की पहचान होती है तथा कर्तव्य-अकर्तव्य का विवेक सत्संग से ही संभव है। सत्संग का अर्थ है अच्छे व सत्य मार्ग पर चलने वाले लोगों का साथ। उक्त विचार आर्य विद्वान राम प्रसाद याज्ञिक ने आर्य समाज विज्ञान नगर में आयोजित पूर्णिमा वैदिक सत्संग समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में व्यक्त किये।

thearyasamaj.org

श्री कान्ति प्रसाद गोयल दिवंगत

श्री सुनील कुमार गोयल गुलावटी के पूज्य पिता श्री कान्ति प्रसाद गोयल पूर्व प्रबन्धक आर्य कन्या इण्टर कालेज, गुलावटी, बुलन्दशहर का दिनांक 14.11.2014 को देहान्त हो गया वे 88 वर्ष के थे।

उनके निधन के समाचार को पाकर आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान-श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, कोषाध्यक्ष-डॉ. धीरज सिंह ने उनके यहां जाकर हार्दिक सम्वेदना प्रकट की।

परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवंगतात्मा को सद्गति एवं दुखी परिजनों को मनःशान्ति व धैर्य प्रदान करे। आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. एवं आर्य मित्र परिवार की ओर से भी दुखी परिजनों के लिए हार्दिक शोक संवेदना व्यक्त की गयी।

-सम्पादक

लाला लाजपत राय की देशभक्ति हम सबके लिए प्रेरणादायक

पंजाब केसरी लाला लाजपत राय का बलिदान दिवस समारोह

कोटा, 17 नवम्बर, पंजाबी जनसेवा समिति द्वारा शॉपिंग सेन्टर में लाला लाजपत राय सर्किल पर लालाजी की प्रतिमा के पास आयोजित बलिदान दिवस पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पंजाबी जनसेवा समिति के अध्यक्ष अर्जुनदेव चड्ढा ने आज के दिन को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में बहुत बड़ा दिन बताया जिसके फलस्वरूप हमें आगे जाकर आजादी मिली और हमें अपना खोया गौरव प्राप्त हुआ। स्वराज और स्वदेश का जज्बा उन्हें महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज से मिला।

कार्यक्रम में स्थानीय वार्ड पार्षद जसपाल अरोड़ा बिट्टू ने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम के महान् सेनानी लाला लाजपत राय की राष्ट्र भक्ति हम सबके लिए प्रेरणादायक है। अंग्रेजों के प्रति उनका वीरतापूर्वक विरोध एवं महान शहादत के कारण ही वे पंजाब केसरी कहलाए।

इस अवसर पर विद्वान डा. अशोक आर्य ने कहा कि लाला लाजपतराय ने लाल-बाल-पाल की टीम बनाकर आजादी के लिए संघर्ष किया। अंग्रेजों द्वारा उनके ऊपर किए गए लाठियों के प्रहार को अंग्रेजी हुकूमत के ताबूत की एक एक कील बताया।

दर्शन पिपलानी
महामंत्री
पंजाबी जनसेवा समिति

अयप्पा मंदिर कोटा को मलयालम भाषा का वैदिक साहित्य भेंट

आर्य समाज कोटा ने लगाई वैदिक साहित्य प्रदर्शनी

कोटा, 27 अक्टूबर। वेदमंत्रों के गायन से मलयालम भाषा का वैदिक साहित्य अयप्पा मंदिर कोटा के अध्यक्ष ओ.एन.के कुरूप व सचिव आर.के.नायर को आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा, मंत्री कैलाश बाहेती व महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति के प्रधान अरविन्द पाण्डेय ने भेंट कर व मंदिर प्रांगण में हिन्दी, मलयालम व अंग्रेजी भाषा के वैदिक साहित्य की प्रदर्शनी लगाकर प्रचार एवं विक्रय कर महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति ने नवीन अभियान का प्रारंभ किया।

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. लखनऊ से सम्बद्ध उत्तर प्रदेश की समस्त आर्य समाजों को नियमानुसार वार्षिक चित्रों के प्रपत्र प्रेषित किये जा रहे हैं।

सभी आर्य समाजों को निर्देशित किया जाता है कि विधिवत् चित्रों को भर कर दशांश तथा सभा को प्राप्त व्यय धन, आर्यमित्र का शुल्क आदि सहित यथा समय प्रेषित करने की कृपा करें।

-स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती,
मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.

पुस्तक विमोचन

श्री वेदारी लाल आर्य झांसी द्वारा लिखित "बुन्देलखण्ड में आर्य समाज का इतिहास" पुस्तक का विमोचन रविवार 09 नवम्बर 2014 को आर्य समाज मंदिर, सदर बाजार, झांसी में पं. नारायणदास तिवारी जी, मोठ-झांसी द्वारा सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर पं. नारायण दास तिवारी जी, जो कि अभी कुछ माह पूर्व अपने जीवन के एक सौवें वर्ष में प्रवेश कर चुके हैं, का भव्य स्वागत सम्मान श्री वेदारी लाल आर्य परिवार द्वारा किया गया। इसी के साथ झांसी जिले के अन्य आर्य वयोवृद्ध सर्व श्रीमती विनोद अरोरा, शकुन्तला यादव, शकुन्तला चड्ढा, शकुन्तला शास्त्री, सुभाषरानी बिन्द्रा, सेवानिवृत्त प्रधानाचार्या कस्तूरबा कन्या इण्टर कालेज, झांसी, सर्वश्री रामदेव झाम्ब, लक्ष्मणदेव झाम्ब, गनपत राय भ्याना, ठाकुरदास वेदपाठी, लखनलाल आर्य, नाथूराम आर्य, राजपाल अरोरा, मोहन नेपाली, डा. शुभेश का भी सम्मान किया गया।

स्वल्पाहार के साथ कार्यक्रम को विराम दिया गया।

डा. कुलवंत गौड़ का आर्य समाज ने किया सम्मान

कोटा, 26 अक्टूबर। नेत्रदान के लिए हजारों लोगों को प्रेरित कर संकल्प पत्र भरवाने तथा लोगों से नेत्रदान कराने के लिए कार्य करने पर आर्य समाज गायत्री विहार कोटा द्वारा प्रसिद्ध नेत्र चिकित्सव एवं सामाजिक कार्यकर्ता डॉ. कुलवंत गौड़ का सम्मान किया गया।

अरविन्द पाण्डेय
प्रचार एवं कार्यालय सचिव, कोटा

पृष्ठ.............4 का शेष

आगरे की कोतवाली लाया गया, उसी तरह बंधे हाथ, गले से पैर तक लोहे में जकड़ा शरीर फिर भी किसी देवता की तरह भव्य और दर्शनीय था। जनसमूह की सांसे थम गयीं, आंसू उमड़ पड़े। गोकुला की सुडौल भुजा पर जब जल्लाद का पहला कुल्हाड़ा चला तो हजारों को जनसमूह हाहाकार कर उठा। चौथी कुल्हाड़ी से छिटकी हुई उनकी बांयी भुजा चबूतरे पर गिरकर फड़कने लगी।

परंतु उस वीर का मुख ही नहीं शरीर भी निष्कम्प था। उसने एक निगाह फव्वारा बन गये बांये कंधे पर डाली और फिर जल्लाद को देखने लगा कि दूसरा वार करे। परंतु जल्लाद जल्दी में नहीं था, उन्हें ऐसे ही निर्देश थे- दूसरे कल्हाड़े पर भी हजारों लोग आर्तनाद कर उठे। उनमें हिंदू और मुसलमान सभी थे। अनेकों ने आंखे बन्द कर ली, अनेक रोते हुए भाग लिये, कोतवाली के चारों ओर मानो प्रलय हो रही हो, एक को दूसरे का होश तक नहीं था, वातावरण में एक ध्वनि थी- हे राम, हे रहीम। सिनसिनी गांव में पैदा हुआ ब्रजमण्डल का यह लाडला वीर राष्ट्र की स्वाधीनता व धर्म हेतु बलिदान देकर अमर हो गया। आज सुरा सुन्दरी के पीछे अंधी बनी भारत की जनता क्या अपने पथ प्रदर्शक से कुछ शिक्षा लेगी? कलम, आज उनकी जय बोल,

चढ़ गये जो पुण्य वेदी पर,
लिए बिना गर्दन का मोल
अंधा चकाचौंध का मारा,
क्या समझे इतिहास बेचारा,
साक्षी हैं उसकी महिमा के
सूर्य चन्द्र भूगोल खगोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द के पक्ष में गया विश्व का सर्वोच्च शान्ति सम्मान

प्रेरणास्रोत : पं. देवनारायण भारद्वाज

डॉ. विजयपाल सिंह
एम.एस.सी.(रसायन)पी.एच.डी.

अक्टूबर 2014 में विश्व का सर्वोच्च नोबेल पुरस्कार 17 वर्षीय बालिका मलाला युसुफजई तथा 60 वर्षीय सामाजिक कार्यकर्ता कैलाश सत्यार्थी को सम्मिलित रूप से दिया गया।

मलाला ने अपनी 11 वर्षीय अवस्था से ही बालिकाओं को शिक्षा के लिए न केवल संघर्ष किया अपितु जान की बाजी लगाकर गोलियां खाकर आतंकियों का मुकाबला किया। इसी प्रकार बाल्यकाल से ही कैलाश सत्यार्थी ने लाठियां खाकर, यातनायें सहकर, बाल बंधुआ मजदूरी से हजारों की संख्या में बच्चों को बचाकर शिक्षा के लिए प्रेरित ही नहीं प्राण प्रण से संरक्षण दिया। मुझे सम्पूर्ण विश्व को बताना है कि इन दोनों विभूतियों ने उस स्वप्न को साकार किया जिसे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वर्षानुवर्ष पूर्व देखा था और अमर ग्रंथ ''सत्यार्थ प्रकाश'' में उल्लेखित किया था। उन्होंने यही संदेश दिया था कि आठ वर्ष से ऊपर का कोई भी बालक घर में न रहकर आवासीय विद्यालय में रहे और बालक एवं बालिका और समान शिक्षा, खान-पान, रहन-सहन सुविधाओं से प्रेरित हो, तभी वे बालक व बालिकाएं राष्ट्र के उत्थानकारी अंग बनेंगे।

महर्षि से पहले इतने सशक्त शब्दों में ऐसा दिशा निर्देश और किसी के द्वारा दिया जाना प्रतीत नहीं होता है। बालिका मलाला युसुफजई के संघर्ष की कहानी तो आप लम्बे समय से जानते चले आ रहे हैं। आइये, थोड़ा कैलाश सत्यार्थी के बारे में जानकारी करें-

कैलाश सत्यार्थी का जन्म 11 जनवरी 1954 को विदिशा के हिंदू (आर्य) परिवार में मध्य प्रदेश में हुआ था। वर्तमान समय में कैलाश सत्यार्थी नई दिल्ली में रहते हैं। उनके परिवार में उनकी पत्नी सुमेघा, पुत्र, पुत्रवधू तथा पुत्री हैं।

वे बचपन से ही दूसरों के प्रति बेहद सहयोगी रहे और हमेशा दूसरों की मदद करते रहे। जब वे 11 वर्ष के थे तब उन्होंने महसूस किया कि बहुत से बच्चे किताब न होने के कारण पढ़ने से वंचित रह जाते हैं। इसलिए उन्होंने एक ठेला लेकर पास होने वाले बच्चों की किताबें एकत्रित कीं और उन्हें जरूरतमंदों तक पहुँचाया। 23 वर्ष की अवस्था में कैलाश सत्यार्थी की शादी हो गयी, उस समय देश में जे.पी. आन्दोलन का दौर था। उनके अनेक साथी चुनाव लड़कर राजनीति में उतर गये। कैलाश सत्यार्थी पर भी इसका दबाव डाला गया, लेकिन वे कम उम्र होने के कारण इससे बच गये, लेकिन इसके पीछे मुख्य वजह यह भी थी कि उन्हें राजनीति में जरा भी रूचि नहीं थी। उनका शुरू से ही मानना था कि समाज में बदलाव के लिए राजनीति नहीं समाज सेवा की जरूरत है।

'संघर्ष जारी रहेगा' पत्रिका की शुरूआत

कैलाश सत्यार्थी ने समाज सेवा की भावना को धार देते हुए अपनी-अपनी आवाज जन-जन तक पहुँचाने का निश्चय किया। इसके लिए उन्होंने संघर्ष जारी रहेगा नामक पत्रिका की शुरूआत की। इस पत्रिका के माध्यम से उन्होंने दबे कुचले लोगों और बंधुआ मजदूरों की पीड़ा को आवाज दी और समाज का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया।

जीवन की एक बड़ी घटना– एक दिन उन्हें वासलखान नाम के व्यक्ति ने बताया कि पंजाब के एक ईंट भट्ठा पर बच्चों से बंधुआ मजदूरी करायी जा रही है और उन्हें बेचने की तैयारी चल रही है। यह सुनकर कैलाश सत्यार्थी का खून खौल उठा। वे अपने कुछ साथियों और एक फोटोग्राफर को साथ लेकर ईंट भट्ठे पर पहुँच गये और चौकीदार को डरा धमकाकर बंधुआ मजदूरों को ट्रक में बिठा लिया लेकिन तभी वहां पर भट्ठा मालिक पुलिस के साथ आ धमका। उसने कैलाश सत्यार्थी व उनके साथियों को भला-बुरा कहकर वहाँ से भगा दिया। इस खींचतान में उनके साथ गये कैमरामैन का कैमरा भी टूट गया। लेकिन किसी तरह उसकी तीन रील सुरक्षित बच गयीं। लेकिन इसके बाद भी कैलाश सत्यार्थी हिम्मत नहीं हारे। उन्होंने उन फोटो को अखबारों में छपने के लिए दे दिया और स्वयं उच्च न्यायालय चले गये। अदालत ने उनकी चिंताओं को समझा और 48 घंटे के अंदर उन बंधुआ मजदूरों को आजाद कराने का हुक्म दिया।

बंधुआ मुक्ति मोर्चे का गठन–

कैलाश सत्यार्थी ने इस घटना से उत्साहित होकर ''बचपन बचाओ आन्दोलन'' की शुरूआत की। इसके लिए उन्होंने स्वामी अग्निवेश जो महर्षि दयानन्द के अनुयायी थे के साथ मिलकर बंधुआ मुक्ति मोर्चा का गठन किया। इस संस्था के लगभग 20 हजार सदस्य है जो कालीन, कांच, ईंट भट्ठो, पत्थर खदानों, घरेलू बाल मजदूरी तथा साड़ी उद्योगो जैसे खतरनाक उद्योगों में काम करने वाले बच्चों को मुक्त कराता है। वर्तमान में देश भर के 12 प्रांतों में बचपन बचाओ आन्दोलन की राज्य इकाईयां हैं। कैलाश सत्यार्थी ने बचपन बचाओ आन्दोलन को सफल बनाने के लिए ''बाल मित्र ग्राम'' की परिकल्पना की है। इसके लिए किसी ऐसे ग्राम का चयन किया जाता है जो बाल मजदूर से ग्रस्त हो। बाद में उस ग्राम से धीरे धीरे बाल मजदूरी समाप्त की जाती है तथा बच्चों का नामांकन स्कूलों में कराया जाता है। इसके बाद बच्चों की ''बाल पंचायत'' का गठन किया जाता है। शहरों में यह योजना ''बाल मित्र वार्ड'' के नाम से संचालित हो रही है।

वैश्विक अभियान– बाल मजदूरी के खिलाफ चलने वाले अपने अभियान को कैलाश सत्यार्थी ने 26 वर्ष की उम्र में ही इलेक्ट्रानिक अभियंता की नौकरी छोड़कर बच्चों के लिए देश के साथ-साथ विदेशो में भी फैलाया है। उन्होंने 108 देशों के 14 हजार संगठनों के साथ मिलकर ''बाल मजदूरी विरोधी विश्व यात्रा'' आयोजित की जिसमें लाखों लोगो ने शामिल होकर बाज मजदूरी समाप्त करने का प्रण लिया। उनके इस प्रयास से प्रभावित होकर सार्क के सदस्य देशों ने बाल मजदूरी पर एक कार्य दल बनाने की घोषणा की है। इस समय वे ''ग्लोबल मार्च अगेन्स्ट चाइल्ड लेबर'' (बालश्रम के खिलाफ वैश्विक अभियान) के अध्यक्ष भी हैं।

पुरस्कार एवं सम्मान :

1993 : अशोक फेलो चुने गये (अमेरिका)
1994 : The Aachener International Peace Award (जर्मनी)
1995 : ट्रम्पेटर पुरस्कार (अमेरिका)
1995 : रॉबर्ट एफ कैनेडी मानव अधिकार पुरस्कार (अमेरिका)
1998 : गोल्डन फ्लैग पुरस्कार (नीदर लैण्ड)
1999 : Friedrich Ebert Stiftung Award (जर्मनी)
2002 : वालेनवर्ग मैडल (मिशिगन विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त)
2006 : फ्रीडम पुरस्कार (अमेरिका)
2007 : इटली के सीनेट का स्वर्ण पदक
2007 : अमेरिका के स्टेट विभाग द्वारा 'आधुनिक दासता को समाप्त करने के लिए कार्यरत नायक' का सम्मान
2008 : अल्फांसो कोमिन अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार (स्पेन)
2009 : डिफेन्डर्स ऑफ डेमोक्रेसी पुरस्कार (अमेरिका)
2014 : नोबेल शान्ति पुरस्कार।

वेद सदन
2/343, प्रगति नगर कालोनी,
विशनपुर रामघाट रोड, अलीगढ़ (उ.प्र.)

आर्य समाज फैजाबाद का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

सबका रक्षक होने से परमात्मा का मुख्य नाम ओ३म हैं।

ओ३म् अब धातु से बनता है जिसके चार अर्थ है- रक्षा, गति, कान्ति व श्रवण ''अवति इति ओ३म्'' अर्थात सबका रक्षक होने से परमात्मा का मुख्य नाम ओ३म हैं।

उक्त विचार डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री संस्कृत विभागाध्यक्ष अमेठी ने स्थानीय आर्य समाज जमुनिया बाग के ११६वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर प्रकट किये। इसके अतिरिक्त मुम्बई से पधारे डा. सोमदेव शास्त्री अध्यक्ष वैदिक मिशन ने कहा कि मनुष्य को जितना समय मिले उतना समय बिना आलस्य किये नित्य वेदों का अध्ययन करना चाहिए। क्योंकि वही परम धर्म हैं वास्तव में स्वाध्याय ऋषियज्ञ है। परंतु इस भाग को लोग भूल जाते हैं।

लखनऊ से पधारें विमल किशोर आर्य वैदिक प्रवक्ता ने कहा वेद ही अपौरूषमेय ज्ञान है शेष सभी सम्प्रदाय, मत पन्थ की पुस्तकें पौरूषेय हैं। ईश्वर सर्वज्ञ है इसीलिए वेद में सृष्टि के अनुकूल बातें है। वेद में ईश्वर का उपदेश सभी प्राणी मात्र की भलाई के लिए है।

इसके अतिरिक्त सत्यपाल सरल देहरादून एवं अमर सिंह ब्यावर राजस्थान के सारगर्भित मधुर भजन हुए। कार्यक्रम में १२ नवम्बर को प्रातः ७ बजे से १० बजे तक सामवेद पारायण यज्ञ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा डा. सोम देव शास्त्री थे। यज्ञोपरांत फैजाबाद के सांसद श्री लल्लू सिंह के कर कमलों द्वारा नवीन आर्य समाज भवन का उद्घाटन हुआ। अपरान्ह दो बजे एक विशाल शोभा यात्रा आर्य समाज उद्यान से चौक बजाजा, फतेहगंज, कसाईबाड़ा रिकाबगंज से होते हुए आर्य समाज उद्यान पर समाप्त हुई। जिसमें कई विद्यालयों के छात्र छात्रों व शिक्षकों ने भाग लिया। १३ नवम्बर को यज्ञ के पश्चात् ध्वजारोहण डा. सोमदेव शास्त्री जी द्वारा किया गया। १४ नवम्बर को आर्य महिला सम्मेलन तथा १५ नवम्बर को सामवेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। पारायण यज्ञ के मुख्य यजमान कालेज प्रधानाचार्य श्री नीलकांत वर्मा, विजय मनूचा, संजीव सागर, हिमांशु त्रिपाठी, पुरुषोत्तम पांडेय, गुलाब चन्द्र रस्तोगी, राजमणि मिश्रा, सत्यनी बने। कार्यक्रम को सफल बनाने में निःशुल्क गुरूकुल महाविद्यालय अयोध्या के प्राचार्य श्री नागेन्द्र शास्त्री एवं गुरूकुल के वेदपाठी ब्रह्मचारी राजेश मित्र, दीपक मित्र, अनूप मित्र, चंदन मित्र, धनंजय मित्र का सहयोग प्रशंसनीय रहा।

thearyasamaj.org

पंजी०सं० आर.एन.आई.-२४४१/५७ - आर्यमित्र २५ नवम्बर, २०१४ पोस्टल रजि.जी.पी.ओ. लखनऊ/एन.पी.-१४/२०१३-१५ एक प्रति ₹ २.००

आर्य मित्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०९४१२६७८५७१, मंत्री-०९८३७४०२१९२, सम्पादक-९५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

....

....

....

ITEM NO.30 COURT NO.6 SECTION XI

S U P R E M E C O U R T O F I N D I A
RECORD OF PROCEEDINGS

Petition(s) for Special Leave to Appeal (C) No(s). 27761/2014

(Arising out of impugned final judgment and order dated 25/09/2014 in SA No. 246/2013 passed by the High Court Of Judicature at Allahabad, Lucknow Bench)

JAI NARAYAN ARUN AND ANR Petitioner(s)

VERSUS

STATE OF UP AND ORS Respondent(s)

(with appln. (s) for exemption from filing O.T.)

Date : 21/11/2014 This petition was called on for hearing today.

CORAM :
HON'BLE MR. JUSTICE J. CHELAMESWAR
HON'BLE MR. JUSTICE S.A. BOBDE

For Petitioner(s) Mr. Guru Krishna Kumar, Sr. Adv.
Mr. Pradeep Kant, Sr. Adv.
Mr. T.N. Saxena, Adv.
Mr. H.C. Kharbanda, Adv.
Mr. Vipin Kumar Saxena, Adv.
Mr. Divyanshu Sahay, Adv.
Mr. Yash Pal Dhingra,Adv.

For Respondent(s) Mr. Kapil Sibal, Sr. Adv.
Mr. Shyam Divan, Sr. Adv.
Ms. Rachana Srivastava,Adv.

Mr. K.K. Bhatti, Adv.
Mr. Shiv Ram Sharma,Adv.

UPON hearing the counsel the Court made the following
O R D E R

The special leave petition is dismissed.

(DEEPAK MANSUKHANI) (INDU BALA KAPUR)
COURT MASTER COURT MASTER

माँ अमृत है

दे सको तो दे दो जीवन।
है तेरी माँ, पकड़ो चरन।।
माँ चरन को कर नमन, कर नमन, कर नमन।।
आँख नम क्यों पूछ माँ से,
आँसू बहे क्यों पूछ माँ से,
सर झुका लो, कर नमन, कर नमन, कर नमन।।
देख जन्नत,माँ चरन में,
सिर झुका लो उस चरन में,
आशीष पा लें, कर नमन, कर नमन, कर नमन।।
गर हुआ गफलत में आज,
दूर जायेगी, तब वह आज,
उठ माँ को पा ले, कर नमन, कर नमन, कर नमन।।
माँ चिरागी है बुझ गई,
सागर से है कुछ कह गई,
बुझे चिराग का कर नमन, कर नमन, कर नमन।।

रचयिता डा. बी.पी. सागर
अंतरंग सदस्य
आ.प्र.स. उ.प्र. लखनऊ

शिक्षा से ही मिलती है जीवन को सही दिशा

आर्य समाज द्वारा स्कूली छात्र-छात्राओं को पाठ्य सामग्री का वितरण

कोटा, 1 नवम्बर। शिक्षा ही मनुष्य को मानव बनाती है तथा शिक्षा से ही जीवन को सही दिशा मिलती है। उक्त विचार आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने रथकांकरा गांव में स्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालय रथकांकरा में छात्र-छात्राओं को आर्य समाज की ओर से पाठ्य सामग्री वितरण के एक संक्षिप्त कार्यक्रम के आयोजन में अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किये।

आर्य विद्वानों से अनुरोध

प्रतिवर्ष ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित किया जाता है। आगामी बोधोत्सव १६, १७, १८ फरवरी, २०१५ को समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है और इसी अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित होगा।

आपसे प्रार्थना है कि आप अपने सारगर्भित अप्रकाशित लेख एवं कविता ३० दिसम्बर, २०१४ तक भिजवाकर कृतार्थ करें। लेख वेद, स्वामी दयानन्द, योग स्वास्थ्य आदि एवं अन्य जन उपयोगी प्रेरणादायक विषयों पर ही सीमित हों, ऐसा निर्णय किया है। यदि प्रकाशन सामग्री टाईप की हुई हो तो सुविधाजनक रहेगा। इसके लिये मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूँगा।

-अजय सहगल, सम्पादक
टंकारा समाचार
ए-४१६, डिफेन्स कालोनी, नई दिल्ली-११००२४
चलभाष नं० ९८१००३५६५८

सभी के प्रति आभार अभिव्यक्ति

मेरी धर्मपत्नी शकुन्तला अवस्थी का निधन ४ जुलाई, २०१४ को विशेष अस्वस्थता से हुआ था। जिसका समाचार सभी आर्य पत्रों में प्रकाशित हुआ। मेरे पास सम्वेदना पत्र व फोन अद्यावधि आ रहे हैं। मैं सभी को व्यक्तिगत आभार-पत्र नहीं भेज सका हूँ। इसी के द्वारा मैं सभी के प्रति आभारी हूँ कि सभी मेरी दुख की घड़ी में जब जिसे पता चला मुझे सान्त्वना पत्र भेजे व फोन पर सांत्वना दी। पुनः बारम्बार आभारी हूँ।

-वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक
आर्य मित्र साप्ताहिक, लखनऊ

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।